सन्तुष्ट होना पड़ेगा। उनके भीतर शिल्पों को जानने, स्पर्श करने संस्कृति के प्रति उनके लगाव व उसी में समाहित विषयवस्तु को जानने का लगाव भी केवल कल्पना की वस्तु बनकर रह जाएगा। लिपि संवर्धन एवं उसका रूपान्तरण या लिप्यान्तरण आज के भौतिकवादी समाज को सरल भाषा में समझने का प्रयास क्षणिक न हो, वह निरन्तर बना रहे। इसके लिए जरूरी है कि लिपि संग्रहालय की ओर हम सभी को बढ़ना चाहिए एवं साक्ष्यों के समीक्षात्मक अध्ययन के बाद संवर्धन के लिए हर स्तर पर प्रयास करना चाहिए। एक-दो वर्ष की अल्पावधि में संस्कृति को समझना एवं उसका लिप्यान्तरण करना और उसका अनुवाद करना कठिनतम कार्यों की श्रेणी में आता है। नवागढ़ में मिले एक हजार वर्ष से अधिक की कालावधि के लेख प्रमाण के संवर्धन का कार्य दुर्लभतम है। यहाँ बीहड़ जंगलों से अटे ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने की अपनी चुनौतियाँ भी हैं। अतः निष्कर्ष सहित लेख है कि नवागढ़ लिपि संस्कृति नागरी एवं कलचुरीकालीन लिपि है।

नवागढ़ में शैलचित्रों की खोज 6 अज़्टूबर 2014 में ब्र. जयकुमार निशांत द्वारा की गयी है। डॉ. स्नेहरानी जैन ने जैन पहाड़ी की कच्छप गुफा में गहन अन्वेषण एवं अध्ययन किया। डॉ. मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी एवं डॉ. एस.एस. सिन्हा वाराणसी ने बगाज टोरिया पर स्थित विशाल चट्टान पर उत्कीर्ण अभिलेख का भी विस्तृत विश्लेषण किया है।

बुन्देलखंड एक प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सांस्कृतिक प्रदेश है। जिसका प्राचीनतम स्वरूप विंध्य है एवं सतपुड़ा पर्वत मालाओं के साथ-साथ क्षेत्रीय लघु पहाड़ियों के शैलाश्रयों में देखने को मिलता है। इसमें पुरापाषाण कालीन सज़्यता, शैलचित्र, साधनास्थल, अध्ययन स्थलों की प्राचीनता सिद्ध होती है।

विलक्षण तीर्थ एवं कला क्षेत्र नवागढ़

डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी

बुन्देलखण्ड में जैन समाज के अनेक तीर्थ हैं। इनमें इतिहास एवं पुरातज़्व की अमूल्य निधियाँ संरक्षित हैं। नवागढ़ (जिला-ललितपुर) पुराताज़्विक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध क्षेत्र है, जिसका संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत है। यहाँ अन्वेषण की प्रचुर संभावनाएँ हैं।

भारतवर्ष अपनी संस्कृति, इतिहास, शिल्पकला, मूर्तिकला आदि विधाओं का संरक्षण करने वाला गौरवशाली देश है। यहाँ सभी धर्मों संस्कृतियों, भाषाओं एवं कलाओं को समादर प्राप्त है। भारतीय कला एवं संस्कृति को आतताइयों एवं प्राकृतिक प्रकोपों ने नष्ट करने का कई बार प्रयास किया, परन्तु यह भारत की माटी में इतनी रची बसी है कि इनको समूल मिटाया जाना संभव नहीं हुआ।

मैं जैन कलाशिल्प पर 40 वर्षों से निरंतर कार्य कर रहा हूँ। मैंने पाया कि दिगज़्बरत्व का अपना विशिष्ट सौन्दर्य है, जो भौतिकता से परे आध्यात्मिक, वीतरागता एवं आन्तरिक शांति के रूप में प्रस्फुटित होता है, आवश्यकता है इस मुखरित मौन को आत्मसात करने की। मानव जीवन का यही चरम लक्ष्य भी है। इसे शिल्पियों ने प्रस्तर खण्डों पर अपनी छैनी से कलात्मक भाव-भंगिमा एवं मूक भाषा में बखूबी उकेरा है, जो अनूठा एवं अनुपम है। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि कलात्मक दृष्टि से दो वीतराग जिनबिज़्ब अभिव्यक्ति के स्तर पर कभी समान नहीं हो सकते।

शिल्पियों ने अपनी कलात्मक भावना को इतना विस्तार दिया कि वीतराग बिज़्ब भी परिकर के साथ मुखरित हो उठता है, जिसका प्रत्येक अंग हमें आकर्षित करता है, चाहे वह अष्टप्रातिहार्य हो या मंगलद्रव्य, मुखाकृति हो या हस्तपाद विन्यास। यहाँ तक कि श्रीवत्स चिह्न भी वक्ष स्थल की शोभा में वृद्धि करता है।

मैंने बहुत से सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र एवं कला क्षेत्रों में अन्वेषण कार्य किया है, परन्तु नवागढ़ प्राचीन नन्दपुर क्षेत्र का अपना वैशिष्ट्य है। यहाँ कला से लेकर संत-साधना सभी के आयाम स्थापित हुए हैं।

ब्र. जयकुमार निशांत ने नवागढ़ क्षेत्र के अन्वेषण, संरक्षण एवं संवर्धन में अथक श्रम किया है। उन्होंने प्रतिष्ठा कर्म जैसे लोकेषणा कार्य को विराम देकर संस्कृति संरक्षण का लक्ष्य बनाया, यह उनका अदज़्य साहस है। निशांत जी ने यहाँ कला की विभिन्न विधाओं वाले पुरातज़्ववेज़ाओं को आमंत्रित करके नवागढ़ में विशेष अन्वेषण करवाये हैं, जिससे इस क्षेत्र की जीवन्तता पुरा-पाषाण काल से गुप्त, प्रतिहार, चन्देल एवं बुन्देलखण्ड तक सिद्ध हुई है।

'निशांत जी' ने नवागढ़ आने का कई बार आग्रह किया पर टलता रहा। जैनकला पर कार्यरत डॉ. शांतिस्वरूप सिन्हा (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) के साथ मार्च 2018 में ही नवागढ़ आना सज़भव हो सका। 25 मार्च से 28 मार्च 2018 तक नवागढ़ एवं आसपास के क्षेत्रों का अन्वेषण करने पर हमें लगा कि यहाँ की कला देवगढ़ एवं खजुराहो की जैन कला का स्मरण कराती है।

यहाँ के शैलाश्रय (कच्छप शिला एवं साधना गुफा) प्राकृतिक सौन्दर्य एवं शांति के मध्य ध्यान-साधना के विशेष स्थान हैं। इनमें उकेरी कायोत्सर्ग- मुद्रा एवं चरण चिह्न गुप्तकालीन हैं। कच्छप गुफा के चित्रों में ज्यामितीय आकारों तथा पशुओं के चिह्न हैं जो ई. पू. 1000 से पूर्व के लगते हैं। इससे सिद्ध होता है कि नवागढ़ क्षेत्र में जैन संतों का आवागमन तीसरी-चौथी सदी में होने लगा था। यहाँ प्राप्त विभिन्न मुद्राओं वाले उपाध्याय बिज़्बों एवं मानस्तज़्भ में उत्कीर्ण उपाध्याय बिज़्बों से प्रतीत होता है कि देवगढ़ की तरह नवागढ़ भी विद्याध्ययन एवं साधना का विशेष स्थान रहा है, जिसकी स्थापना गुप्तकाल के पूर्व में हो गई थी।

नवागढ़ में संगृहीत पुरासज़्पदा से यहाँ कई जैन मंदिरों के होने का संकेत मिलता है। आसपास के निरीक्षण से ऐसे संकेत मिलते हैं कि यहाँ जैन मंदिरों के साथ वैष्णव एवं शैव मंदिर भी रहे होंगे जो भारतीय संस्कृति की धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाते हैं।

यहाँ संगृहीत संवत् 1123 (1066 ई.) का तीर्थंकर आदिनाथ का सिंहासन महज़्वपूर्ण है। आचार्य शैलाश्रय से प्राप्त श्रेष्ठी पाहल की प्रशस्ति से ऐसा प्रतीत होता है कि चन्देल शासक धंगदेव संवत् 1011 (ई. 954) के शासन काल में राजसज़्मान प्राप्त श्रेष्ठी पाहल (पाहिल) ने मुनि वासवचंद के काल में खजुराहों में जैन मंदिर वर्तमान में पार्श्वनाथ मंदिर निर्माण के साथ नन्दपुर वर्तमान नवागढ़ में भी जैन मंदिर का निर्माण कराया होगा।

पहिल के पौत्र महिचन्द्र और प्रपौत्र देल्हण ने संवत् 1195 (1138 ई.) में तीर्थंकर महावीर मूर्ति की स्थापना कराई। नवागढ़ तीर्थ में मंदिर निर्माता श्रेष्ठियों के पृथक-पृथक बिज़्ब भी विलक्षण हैं।

नवागढ़ साधना तीर्थ में प्राचीन काल से वर्तमान काल तक सतत जैन संतों का आवागमन एवं विशाल मंदिरों का निर्माण हुआ, जिससे स्पष्ट होता है, कि यहाँ के श्रावक समृद्धशाली एवं धार्मिक प्रवृज़ि के थे।

नवागढ़ की जैनकला का समावेशी स्वरूप एक लज़्बे इतिहास को संजोये हैं, जिसमें वीतरागी तीर्थंकरों की मनोहारी मूर्तियों को पारज़्परिक मुद्राओं ध्यान और कायोत्सर्ग में निरूपित किया गया है। तीर्थंकरों की शताधिक मूर्तियों में अधिकांशतः पीठिका पर उनके पारज़्परिक लांछन और सिंहासन, चामरधारी सेवक तथा शीर्ष भाग में त्रिछत्र जैसे प्रातिहार्य देखे जा सकते हैं। सामान्यतः पीठिका के छोरों पर यक्ष-यक्षिणी भी निरूपित हैं।

ऋषभनाथ और नेमिनाथ के साथ क्रमशः पारज़्परिक यक्ष-यक्षी, गोमुख चक्रेश्वरी और कुबेर अज़्बिका की मूर्तियाँ रूपायित हैं।

12वीं शती ई. के तिथि युक्त संवत् 1203 (1146 ई.) के मानस्तज़्भों में ऊपरी भाग में तीन ओर अर्हन्त और एक ओर उपाध्यायों की आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं, जबकि नीचे चारों और यक्षियों की मूर्तियाँ हैं जिनमें चक्रेश्वरी, अज़्बिका, पद्मावती एवं ज्वालामालिनी को पहचाना जा सकता है।

अभिलेखों की दृष्टि से भी नवागढ़ की जैन पुरा सज़्पदा महज़्वपूर्ण है। इनमें संवत् 1123 से संवत् 2059 (1066 से 1997 ई.) तक के कई मूर्तिलेख हैं जो नवागढ़ की पुरातज़्व यात्रा के विकास पर कई दृष्टियों से महज़्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। इन लेखों में सामान्यतः मूर्ति की स्थापना से संदर्भित भट्टारक पद्मदेव, राजपुत्र देवपाल तथा श्रेष्ठी कुल के गोलापूर्व अन्वय से सज़्बन्धित साहू रामचन्द्र, बालू, महीचन्द, देल्हण और नारी प्रतिष्ठाकर्त्री के नाम महज़्वपूर्ण हैं।

तीर्थंकर मूर्तियों के अतिरिक्त उपाध्यायों की स्वतंत्र मूर्तियाँ शास्त्र एवं शिक्षा की दृष्टि से नवागढ़ के महज़्व को प्रदर्शित करती हैं। इनके अतिरिक्त क्षेत्ररक्षक देवता के रूप में क्षेत्रपाल (13वीं शती) के शीर्ष भाग में छोटी तीर्थंकर मूर्ति है। नायिकाओं या

अप्सराओं तथा तीर्थंकर मूर्तियों में सर्वालंकृत चामरधारों की आकृतियाँ कलात्मक दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान मंदिर अरनाथ (18वें तीर्थंकर) को समर्पित है जो नवागढ़ क्षेत्र का मुज़्य जैन मंदिर है। गर्भगृह में प्रतिष्ठित लगभग 4.75 फीट की कायोत्सर्ग मूर्ति सन् 1959 में उसी स्थान से खुदायी में प्राप्त हुयी थी, जो 10वीं शती की प्रतीत होती है। अरनाथ के दोनों पार्श्व में कुन्थुनाथ और शांतिनाथ की सुन्दर कायोत्सर्ग मूर्तियाँ देखी जा सकती हैं, जिन्हें 1985 में स्थापित किया गया था। इस प्रकार शांतिनाथ, अरनाथ और कुन्थुनाथ (पूर्व में चक्रवर्ती, कामदेव और बाद में कैवल्य व दीक्षा के बाद तीर्थंकरों के रूप में) भगवान् की मूर्तियों वर्तमान में वेदी में है।

वर्तमान अरनाथ मंदिर के ऊपरीतल एवं अन्य वेदियों में 20वीं शती की कई तीर्थंकर मूर्तियाँ हैं। मूलनायक भगवान् अरनाथ के जीवन दृश्यों का विस्तृत उत्कीर्णन भौंयरे की भीतरी भिज़ियों पर दृष्टव्य है, जो इसके आकर्षण को द्विगुणित करता है। मंदिर के प्रांगण की दीवार में मानस्तज़्भ के सामने मूल मंदिर के वितान का अवशेष भी लगाया गया है जो 10वीं शती ई. के मंदिर की विशालता का साक्षी है।

मंदिर प्रांगण के आवासीय भवन के ऊपरी तल के मंदिर में भी धातु एवं प्रस्तर की कई तीर्थंकर मूर्तियाँ सुरक्षित हैं । इनमें 13 धातु मूर्तियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं जो आकार में एक से ग्यारह इंच की हैं। इनमें संवत् 1548 (1491 ई.) की डेढ़ इंच की पार्श्वनाथ की धातु मूर्ति में सर्प फणों का छत्र सुन्दर है। शक संवत् 1586 (1721 ई.) की पार्श्वनाथ की दूसरी ध्यानस्थ ताम्र धातु की मूर्ति (11 इंच) में उनके धरणेन्द्र यक्ष एवं पद्मावती यक्षी का पारस्परिक आयुधों वाहनों एवं सर्पफणों के छत्र सहित अंकन हुआ है। इसी प्रकार नेमिनाथ की संवत् 1490 और विमलनाथ की धातु मूर्तियाँ भी हैं। 17 वीं से 20 वीं शती ई. के मध्य की ऋषभनाथ शांतिनाथ, कुन्थुनाथ एवं पार्श्वनाथ की प्रस्तर मूर्तियाँ भी कला एवं आस्था की दृष्टि से ध्यातव्य है।

जैनकला के विविध रूपों के साथ ही नवागढ़ क्षेत्र में वैदिक पौराणिक परज़्परा की देव मूर्तियाँ भी उपलज़्ध हैं, जो वैष्णव या शैव मंदिरों के इस क्षेत्र में होने को प्रमाणित करती हैं। इन मूर्तियों में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, शक्ति, कार्तिकेय, सूर्य एवं अप्सराओं की मूर्तियाँ क्षेत्र के आस-पास बिखरी हुई देखी जा सकती हैं, जिनका

समुचित रख-रखाव आवश्यक है। वस्तुतः नवागढ़ का जैन कला के क्षेत्र के रूप में सज़्यक् विकास अपेक्षित हैं।

नवागढ़ में अन्वेषण की बहुत संभावनाएँ हैं। यहाँ के शिल्प का गहन दृष्टि से निरीक्षण और विस्तृत अध्ययन करने की आवश्यकता है। इस भूमि के गर्भ में संस्कृति के कितने रहस्य हैं ? कहा नहीं जा सकता, पर यह निश्चित है यह उस काल का महज़्वपूर्ण स्थल रहा होगा, जहाँ जैनधर्म, संस्कृति, कला एवं साधना का विकास श्रेष्ठतम स्तर पर हुआ।